International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(6): 175-178

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(6): 175-178
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 14-09-2016
Accepted: 15-10-2016

बन्दना शर्मा
शोध–छात्रा
संस्कृत–विभाग, हि0 प्र0 वि0 वि0,
शिमला–171005

Correspondence
बन्दना शर्मा
शोध–छात्रा
संस्कृत–विभाग, हि0 प्र0 वि0 वि0,
शिमला–171005

भविष्य पुराण में वर्णित इस्लाम

बन्दना शर्मा

सारांश
संस्कृत वाङ्मय में पुराणों की उत्कृष्ट भूमिका रही है। पुराण भारतीय संस्कृति के महत्त्वपूर्ण अङ्ग स्वीकार किये गये हैं। पुराण भारतीय संस्कृति के मेरुदण्ड हैं जिस पर आधुनिक भारतीय समाज अपने अस्तित्व को प्रतिष्ठित करता है। अट्ठारह पुराणों में भविष्य पुराण का भी विशेष महत्व है। इस पुराण का नाम भविष्य पुराण है पर यह भी बहुत प्राचीन है। भविष्य पुराण के नामकरण का कारण यह है कि इस पुराण में भविष्य में होने वाली घटनाओं का वर्णन किया गया है। इस पुराण में इन भविष्यकालीन घटनाओं के वर्णन से यह दुष्परणिाम हुआ कि समय–समय पर होने वाले विद्वानों ने इस पुराण में अपने समय में होने वाली घटनाओं को भी जोड़ दिया जिससे इस पुराण का मूलरूप विकृत हो गया है। सभी पुराणों की भविष्य पुराण का मूल विषय भविष्यत्कालिक ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करना था परन्तु इस समय यह एक साम्प्रदायिक ग्रन्थ बन गया है। भविष्य पुराण में अनेक भविष्यवाणियां दी गई है। इसमें चारों वर्णों के कर्त्तव्य, व्रत और धर्मादि वर्णित है। भविष्य पुराण में जिन ऐतिहासिक सामग्रियों का संचय है वैसा किसी अन्य पुराण में नहीं है। भविष्य पुराण में ऐतिहासिक सामग्री में मनु के राज्यारोहण से लेकर अंग्रेजों के भारत में आने तक का विस्तार से वर्णन है। भविष्य पुराण में विभिन्न वर्णसंकर जातियों का वर्णन किया गया है तथा साथ ही इस्लाम धर्म का आंशिक उल्लेख भी किया गया है। भविष्य पुराण में इस्लाम तथा म्लेच्छों का वर्णन प्राप्त होता है। भविष्य पुराण में वर्णित इस्लाम आदि राजाओं की सभ्यता, संस्कृति को म्लेच्छों के अन्तर्गत रखकर म्लेच्छ नाम ही दिया है। अतः भविष्य पुराण में इस्लाम को म्लेच्छों के अन्तर्गत रखकर पौराणिक समय के साथ सम्बन्धित बतलाया है।

मुख्य शब्दः इस्लाम

भविष्य पुराण में इस्लाम
भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व में इस्लाम धर्म धर्म का भी आंशिक रूप से उल्लेख प्राप्त होता है। इस्लाम का अर्थ पाँच नियमों से है – ईमान नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज।[1] इस्लाम धर्म के प्रवर्तक के रूप में हज़रत मुहम्मद का उल्लेख किया गया है। मुहम्मद का अर्थ है – सराहा हुआ तथा प्रशंसा के योग्य।[2] हज़रत मुहम्मद इस्लाम के संस्थापक थे इनका जन्म 560 ई0 में अरब (मक्का) में हुआ था जिस कारण मक्का[3]' आज भी इस्लाम का सर्वोत्तम तीर्थ माना जाता है। मुहम्मद को मुस्लिम धर्म में पैगम्बर कहा गया है।[4] वेदों में भी मुसल शब्द का प्रयोग हुआ है किन्तु वहाँ पर यह शब्द धर्म विषयक न होकर धान कूटने के दण्ड के रूप में प्रयुक्त हुआ है।[5] शतपथ ब्राह्मण में भी यह शब्द इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इसमें कहा गया है कि यज्ञादि हवि के लिये तैयार किये जाने वाले अन्न की पवित्रता के लिए ऊखल–मूसल आदि उपकरणों को जल से शुद्ध करना चाहिये।[6] अतः वेदों में मुसल शब्द का

1 शास्त्री हरदेव, प्राचीन भारतीय संस्कृति कोश, पृ0, 54
2 रामचन्द्र मानक हिन्दी कोश, चौथा खण्ड, पृ0 313
3 मक्का : अरब का एक प्रधान नगर जो मुहम्मद का जन्म स्थान तथा मुस्लमानों का प्रसिद्ध तीर्थ है। श्रीवास्तव मुकुन्दीलाल, ज्ञान शब्द कोश, पृ0 613
4 सोढ़ी मन्जीत सिंह, प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत, पृ0, 39
5 उलूखले मूसले यश्च चर्मणि यो वा शूर्पे तण्डुलः कणः। अथर्ववेद, 10.9.26
6 शिशिनस्यान्ते शम्यामण्डयोरर्यन्ते वृषास्तवावन्वगुलूखलं च मुसलं चान्तरेणो रुऽअन्यानि यज्ञपात्राणि दारुणे पाणौ स्फयम्।। शतपथ ब्राह्मण, 12.5.2.7

प्रयोग तो अवश्य हुआ है किन्तु इसका मुस्लिम धर्म, व्यक्ति जाति आदि किसी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। भविष्य पुराण में इस्लाम धर्म के उदय के विषय में उल्लेख किया गया है कि एक दूसरे देश से एक आचार्य अपने मित्रों के साथ आयेंगे और उनका नाम महामद प्रसिद्ध होगा।[7]

प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि मुहम्मद साहब का जन्म 12 रबीउल अव्वल को हुआ। रबीउल अव्वल का अर्थ है मधुमास अर्थात् हर्षोल्लास का महीना वसन्त। इसकी समानता कल्कि अवतार से की गयी है। कल्कि के जन्म से मानवता का कल्याण होगा तथा इनका जन्म मधुमास के शुक्ल पक्ष और रबी फसल में चन्द्रमा की बारहवीं तिथि को होगा।[8] कल्कि के समय में म्लेच्छ लोग परम अधार्मिक तथा पाखण्ड से युक्त होंगे तथा फिर ये सभी आर्य तथा म्लेच्छ कल्कि के द्वारा निहित होंगे।[9] कल्कि पुराण में कल्कि के साथ म्लेच्छ महामद का उल्लेख भी कहीं–कहीं द्रष्टव्य है। कल्कि के समय में महामद का जन्म, शिव की स्तुति और वरदान प्राप्त करने का वर्णन है। इनके पुनरागमन की कथा ज्ञातिवालों से प्राप्त होती है तथा इनके वर प्राप्त करने की कथा का भी वर्णन है। इनका जन्म स्थान शम्भल ग्राम बतलाया गया है। शम्भल ग्राम में कल्कि के जन्म का वर्णन भागवत पुराण में भी मिलता है।[10]

भविष्य पुराण में प्रतिसर्ग पर्व के अन्तर्गत आल्हा–ऊदल की कथा में भी इस्लाम की तरफ संकेत मिलता है। भविष्य पुराण में वर्णित उल्लेखानुसार महाभारत के युद्ध के अठारहवें दिन भगवान् श्री कृष्ण ने पाण्डवों की रक्षा के लिये भगवान् शिव की स्तुति की थी।[11] भगवान् शिव पाण्डवों की रक्षा हेतु हाथ में त्रिशूल धारण करके पाण्डवों के शिविर के बाहर खड़े हो गये थे।[12] इसी बीच पाण्डवों को मारने के उद्देश्य से अश्वत्थामा वहाँ आ गया किन्तु भगवान् शिव को उनके शिविर की रक्षा करते देख विचलित हो गया। उसने मन ही मन शिव की स्तुति की। अश्वत्थामा की इस स्तुति वर्णन महाभारत में भी मिलता है। भगवान् शिव अश्वत्थामा की स्तुति से प्रसन्न हुये और उन्होंने उसे पाण्डवों के शिविर में जाने के लिए मार्ग दे दिया।[13]

भगवान् शिव ने अश्वत्थामा को दिव्य तलवार प्रदान की थी जिससे धृष्टद्युम्न आदि ने अश्वत्थामा के साथ मिलकर सोये हुये पाण्डव पुत्रों के सिर को धड़ से अलग कर दिया था।[14] समस्त पाण्डवों को जब इस घटना का पता चला तो उन्होंने इस सब का कारण भगवान् शिव को माना और उन्हें अपशब्द कहे और युद्ध किया।[15] तब भगवान् शिव ने उन्हें शाप दिया और कहा तुम सब कृष्ण के प्रपूजक हों अतएव मेरे द्वारा रक्षणीय हो तथा इस कृत्य से भूमण्डल में वध के योग्य हो गये हो। अतः पुनः कलियुग में जन्म लेकर इस अपराध का दण्ड भुक्तोगे।[16] समस्त पाण्डवों में भीम ने महादेव को विशेष दुर्वचन कहे थे तथा शाप के कारण भीम कलियुग में म्लेच्छ योनि में उत्पन्न हो कर वीरण नाम से विख्यात होकर वनरस के अधिपति बने।[17]

भविष्य पुराण में भीम के लिये भी म्लेच्छ शब्द का प्रयोग हुआ है क्योंकि उन्होंने अपशब्दों वाली भाषा का प्रयोग किया था। वीरण नाम से म्लेच्छ योनि में जन्म लेना उनके पूर्व जन्म के कुकर्मों का परिणाम था। वत्सराज के पुत्र वीरण के रूप में भीम का पुनर्जन्म था।[18] भविष्य पुराण के अनुसार कलियुग के दो सहस्त्र वर्ष प्राप्त होने पर म्लेच्छों के वंश की वृद्धि हुई। उस समय समस्त भूमण्डल म्लेच्छों से परिपूर्ण बतलाया गया है तथा इनकी वृद्धि के अनेक मार्ग खुल गये थे।[19]

भविष्य पुराण में शालिवाहन के वंश का वर्णन किया गया है। शालिवाहन के वंश में ही दशम राजा भोजराज प्रसिद्ध हुये जिनके समय भूमण्डल मर्यादा रहित हो गया था। भोजराज बलवान राजा था तथा भूमण्डल को मर्यादारहित होता देख वह दिग्विजय करने के लिये चल पड़ा। उसके साथ कविश्रेष्ठ कालिदास, ब्राह्मण जन तथा दश सहस्त्र सेना थी जिनके साथ वह सिन्धु के पार तक गया।[20] अपनी दिग्विजय में राजा भोज ने गान्धार, कश्मीर, नारव, शठ, म्लेच्छों को जीतकर उनसे बहुत सारा धन प्राप्त किया।[21]

भोजराज मक्का भी गये थे और वहाँ जाकर मक्केश्वर महादेव की पूजा की थी।[22] भोजराज ने बहुत सी माया में प्रवृत्त रहने वाले म्लेच्छों के द्वारा रक्षित शुद्ध, सच्चिदानन्द त्रिपुर असुर के नाशक भगवान् शिव को प्रणाम किया तथा अपने आप को भगवान् के समक्ष किङ्किर की संज्ञा दी।[23] स्तुति के पश्चात् भगवान् शंकर ने उन्हें म्लेच्छों द्वारा अत्यन्त दूषित मक्का एवं वाहीक भूमि को छोड़कर महाकालेश्वर (उज्जैन और मालवा) में रहने का आदेश दिया।[24] क्योंकि वहाँ पर म्लेच्छ ही म्लेच्छ रहते थे, वहाँ आर्य धर्म का सर्वथा अभाव था।

यह वाहीक देश अत्यन्त दारुण स्थिति में इसलिये पहुँच गया है क्योंकि यहाँ एक महामायी था जिसको मैंने (भगवान् शिव) बहुत

---

7 एतस्मिन्नतरे म्लेच्छः आचार्येण समन्वितः
महामदः इति ख्यातः शिष्यशाखासमन्वितः।।
नृपश्चैव महादेवं मरुस्थल निवासिनम्।। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3.21.5

8 द्वादश्यां शुक्ल पक्षस्य माधवे मसि माधवम्।
जातो ददृशतुः पुत्रं पितरौ हृष्टमानसौ।। कल्कि पुराण, 2.15

9 अधार्मिकाश्च तेऽत्यर्थ पाषडाश्चैव सर्वशः।
कल्किनोपहताः सर्वे म्लेच्छा यास्यन्ति सर्वशः।। वायु पुराण, 255

10.1 कल्केः स्तवं शिवपुरोवरलाभः शुकापनम्।
शम्भलग्रामगमनं चक्रे ज्ञातिभ्यो वरकीर्त्तनम्।। कल्कि पुराण, 3.21.5

2 शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः।
भवनेविष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति।। भागवत पुराण, 12.2.8

11 दिनान्तेभगवान्कृष्णो ज्ञात्वा कालस्यदुर्गतिम्।
शिव तुष्टाय मनसा योगरूपं सनातनम्।। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3.19.6

12 पाण्डवान्नक्ष भगवान्नमद्भक्तान्भूतभीरुकान्।
इति श्रुत्वा स्तवं रुद्रो नंदियानोपरिस्थितः।। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3.19.8

13.1 तुष्टुवुर्मनसा रुद्रं तेभ्यौ मार्गं शिवोददात्।। वही, 3.19.20
उग्रं स्थाणुं शिवं रुद्रं शर्वमीशानमीश्वरम्।

2 गिरीशं वरदं देवं भवभावनमीश्वरम्।। महाभारत, सौप्तिक पर्व, 7.2

14 1 गृहीत्वा सं जघनाशु धृष्टद्युम्नपरः सरान। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3.19.11

2 एवमुक्त्वा महात्मान भगवानात्मनस्तनुम्।
आविवेश ददौ चास्मै विमलं खड्गमुत्तमम्।। महाभारत, सौप्तिक पर्व, 8.66

15 स्वायुधैस्ताडयामास देवदेवं पिनाकिनम्।। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3.19.14

16 ताञ्छशाप तदा रुद्रो यूयं कृष्णप्रपूजकाः।
अतोऽस्साभी रक्षिणीया वधयोग्याश्च वै भुविः।।
पुनर्जन्म कलौ प्राप्य भौक्ष्यते चावराधकम्।। वही, 3.19.16–17

17 भीम दुर्वचनहुष्टो म्लेच्छयोनौ भविष्यर्ति।
वीरणो नाम विख्यातः स व वनरसाधिपः।। वही, 3.19.21

18 शतयतः स्मृतो म्लेच्छः शूरो वनरसाधिपः।
तत्पुत्रो भीमसेनांशो वीरणोभूच्छिवाज्ञया।। वही, 3.22.28

19 द्विसहस्त्रे कलौ प्राप्ते म्लेच्छवंशविवद्धिंता।
भूमिम्लेच्छमयी सर्वा नानापथविवर्द्धिता।। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3.5.29

20 मर्यादा क्रमतो लीना जाता भूमण्डले तदा।
भूपर्तिदशमो र्यो वै भोजराजः इति स्मृतः।।
दृष्टवा प्रक्षीणमर्य्यादां बली दिग्विजयं ययौ।
सेनया दशसाहस्त्रयां कालिदासेन संयुतः।
तथान्यैर्ब्राह्मणै सार्द्धं सिधुपारमुपाययौ।। वही, 3.21.2–3

21 जित्वा गान्धारराजान्म्लेच्छन्काश्मीरान्नावाञ्छठान्।
तेषां प्राप्य महाकोशं दण्डयोग्याकारयत्।। वही, 3.21.4

22 नृपश्चैव महादेवं मरुस्थलनिवासिनम्।
गंगाजलैश्च संस्नाप्य पंचगव्यसमन्वितै।।
चन्दनादिभिरभ्यर्च्य तुष्टाव मनसा हरम्।। वही, 3.21.6

23 म्लेच्छैर्गुप्ताय शुद्धाय सच्चिदानन्दरूपिणे।
त्वं मां हि किङ्किर विद्धि शरणार्थमुपागतम्।। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3.21.7–8

24 गंतव्यं भोजराजेन महाकालेश्वरस्थले।
म्लेच्छैस्सदूषिता भूमिर्वाहीका नाम विश्रुता।
आर्यधर्मो हि नैवात्र वाहीके देशदारुणे।। वही, 3.21.9–10

पहले दग्ध कर दिया था। वह त्रिपुर दैत्य के द्वारा भेजा गया यहाँ पुनः आ गया है।[25] वह अयोनि अर्थात् दैत्यों को बढ़ाने वाला था। वह मुझसे वरदान प्राप्त कर चुका है। पैशाच कृतियों को करने में तत्पर वह महामद इस नाम से प्रसिद्ध है।[26] भोजराज जब बाहीक देश गये तो महामद ने कहा – हे राजन्! धूर्तों के देश में जो कि पैशाचिक है तुमको वहाँ नहीं आना चाहिये। भोजराज बोले मेरे प्रसाद से तेरी शुद्धि हो जायेगी। इस प्रकार राजा पुनः अपने देश में आ गया और महामद उनके साथ सिन्धु के तीर तक आ गया।[27] राजा भोज की दारुण म्लेच्छ धर्म में वृद्धि हो गयी थी। उस समय कालिदास भी इनकी राजसभा में थे। उन्होंने महामद की माया को जान लिया था कि महामद ने राजा को मोहित करने के लिये माया रची थी। कालिदास ने क्रोधपूर्वक कहा दुष्ट आचार वाले पुरुषों में अधम मैं तुम्हें मार डालूँगा और नवार्ण मन्त्र का दश सहस्त्र जाप कर हवन किया जिससे वह मायावी भस्म होकर देवत्व को प्राप्त हो गया।[28]

उस मायावी महामद के जलकर भस्म होने के पश्चात् उसके भयभीत शिष्य वाहीक देश में आ गये थे। महामद के शिष्यों का सम्पूर्ण मद नष्ट हो गया और वह स्थान मदहीना (मदीना)[29]' नाम सर्वोत्तम तीर्थ प्रसिद्ध हुआ। जलकर भस्म होने के लिए उसके अनुयायियों ने उन्हें अपना पैगम्बर मान लिया तथा गुरु की भस्म को ग्रहण कर लिया।[30]

भविष्य पुराण में आगे एक विचित्र कथा आती है जिसके अनुसार मायावी मुहम्मद रात में पिशाच का रूप धारण कर राजा भोज के पास गया और बोला – हे राजन्। तुम्हारा आर्य धर्म समस्त धर्मों में उत्तम माना गया है। ईश्वर की आज्ञा से मैं संसार में पैशाच धर्म का प्रचार करुँगा।[31] हमारे अनुयायी स्वलिङ्गच्छेदी अर्थात् खतना कराने वाले शिखा (चोटी) से रहित और दाढ़ी रखने वाले, दूषक, उच्चालापी अर्थात् आज़ान देकर नमाज़ पढ़ने वाले, पशुभक्षी, मुसलसंस्कृत मुसावंशी मुस्लमान नामधारी एवं धर्मदूषक होंगे।[32] इस प्रकार उस मुहम्मद के द्वारा राजा भोज को कहा गया और वह चला गया। तभी से बर्बर, तुष, तुरुष्क आदि देशों में इस्लाम धर्म स्थित है।[33]

भविष्य पुराण में इस्लाम का जो भी वर्णन प्राप्त हुआ है उसमें वर्णित सभी इस्लाम राजाओं को म्लेच्छों के अन्तर्गत वर्णित किया गया है। म्लेच्छों के वंश का प्रारम्भ आदम और हव्यवती द्वारा उत्पन्न सन्तान से बतलाया गया है[34] क्योंकि उन्होंने कलि के द्वारा दिये गये फल को खाकर भगवान् विष्णु की आज्ञा भङ्ग की थी तथा उसी के परिणामस्वरूप उनके पुत्र म्लेच्छ उत्पन्न हुये थे। भविष्य पुराण में वर्णित इस घटना का उल्लेख इस्लाम के पवित्र ग्रन्थ कुर्आन शरीफ में भी प्राप्त होता है। कुर्आन में बतलाया गया है कि अपने परवरदिगार (भगवान्) से डरो जिसने सभी को एक ही जान आदम और हौवा से पैदा किया है।[35] कुर्आन में आदम और हव्यवती का नाम परिवर्तित होकर आदम और हौवा हो गया। भविष्य पुराण के अनुसार आदम और हव्यवती के श्वेत नाम वाला पुत्र प्रसिद्ध हुआ और उसकी आयु द्वादशोत्तर वर्ष बतलायी गयी है।[36] श्वेत के पुत्र का नाम अनूह था जिसने शतहीन पद किया था। अनूह का पुत्र कीनाश हुआ जिसने अपने पितामह के तुल्य राज्य किया था।[37] इसी वंश में आगे चलकर हनूक नामधारी राजा हुआ जिसका कार्यकाल तीन सौ पैंसठ वर्ष कहा गया है। यह राजा विष्णु की भक्ति में लीन रहता था तथा म्लेच्छ धर्म परायण होते हुये भी सशरीर स्वर्ग में आया था। उसके द्वारा फलों का हवन भी किया गया था।[38]

उसके बाद मतोच्छिल तथा मतोच्छिल का पुत्र लोमक हुआ। इसके पश्चात् उसके न्यूह नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ था। न्यूह ने पाँच सौ वर्ष तक राज्य किया था। न्यूह के सीम, शाम और भाव यह तीन पुत्र हुए तथा न्यूह को विष्णु का भक्त कहा गया है जो हर समय विष्णु की भक्ति में लीन रहता था।[39] भगवान् विष्णु ने उसे स्वप्न में भविष्य में होने वाले प्रलय के लिये सावधान कर दिया। उन्होंने न्यूह को कहा था कि आज से सातवें दिन प्रलय होगा। तुम सभी के साथ नाव में शीघ्र समारोहरण कर अपनी तथा अपने सगे सम्बन्धियों की रक्षा करना।[40] स्वप्न में दी गयी आज्ञा को स्वीकार करके न्यूह ने सुपुष्टित नाव बनवायी थी जो तीन सौ हाथ लम्बी और पचास हाथ विस्तृत थी। यह नाव तीस हाथ ऊँची थी एवं बहुत रम्य थी तथा सभी जीवों से समन्वित थी।[41]

भविष्य पुराण में वर्णित इस घटना का उल्लेख कुर्आन शरीफ में भी दिया गया है जिसमें न्यूह को नूह कहा गया और नूह ने अल्लाह के हुक्म से किशती बनवायी थी और उस किश्ती में नूह तथा उसके ईमान वाले साथी बैठ गये तथा तूफान से बच गये।[42]

---

25 वभुवात्र महामायी योऽसौ दग्धौ मया पुरा
त्रिपुरोबलि दैत्येन प्रेषितः पुनरागतः।। वही, 3.21.10–11

26 अयोनि स वरो मतः प्राप्तवान्दैत्यवर्धनः।
महामदः इति ख्यातः पैशाचकृतितत्परः।। वही, 3.21.12

27 नागन्तव्यं त्वया भूप पैशाचे देशद्युतके।
मत्प्रसादेन भूपालः तव शुद्धि प्रजायते।।
इति भूत्वा नृपश्चैव स्वदेशान्पुनरागमत।
महामदः तै सार्द्धं सिन्धुतीरमुपाययौ।। वही, 3.21.13–14

28 म्लेच्छधर्मे मतिश्चासीत्तस्य नृपस्य दारुणे।
तच्छ्रुत्वा कालिदासस्तु रुषा प्राह महामदम्।
माया ते निर्मिता धूर्त नृपमोहनहेतवे।
हनिष्यामि दुराचारं वाहीक पुरुषाधमम्।
इत्यक्त्वा स द्विजः श्रीमन्नवार्णजपतत्परः।।
भस्म भूत्वा स मायावी म्लेच्छदेवत्वमागतः।। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3. 21.17–20

29 मदीना : अरब का प्रसिद्ध नगर जहाँ इस्लाम के प्रवर्तक मुहम्मद साहब की समाधि है। वर्मा रामचन्द्र, मानक हिन्दी कोश – चतुर्थ खण्ड, पृ0 313

30 भयभीतास्तु तच्छिष्या देशं वाहीकमाययुः।
गृहीत्वा स्वगुरोर्भस्म मदहीनत्वमागतम्।
मदहीनं पुरं जातं तेषां तीर्थं समं स्मृतम्।। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3. 21.22

31 रात्रौ स देवरुपाश्च बहुमायाविशारदः।
पैशाचं देहमास्थाय भोजराज हि अब्रवीत।।
आर्य्यधर्म्मो हि ते राजन्सर्वधर्मोत्तमः स्मृतः।
ईशाज्ञया करिष्यामि पैशाचं धर्मदारुणम्। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3.21. 22–23

32 लिङ्गच्छेदी शिखाहीनः श्मश्रुधारी स दूषकः।
उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्यति यो मम।
मुसलेनैव संस्कारः कुशैरिव भविष्यति।।
तस्मान्मुसलवन्तो हि जातयो धर्मदुषकाः।
इति पैशाचधर्माश्च भविष्यति मया कृतः।।वही , 3.21.24–27

33 बर्बर तुष्देशे च द्वीपे नानाविधे तथा। वही, 3.21.28

34 तस्मादादमनामसौ पत्नी हव्यवती स्मृता। वही, 3.4.29

35 या अैयुहन्नसुत्तकू खबकुमुल्लजी खलकुकुम मिन् नफसिव्वाहिदतिव्य खलक मिन्हा जौजहा व बस्स मिनहुमां रिजालन् कसीरौवं निसाअन् ज् वत्तकुल्लाहल्लजी तसाअलून विह वल्अरहाम त् अिन्नल्लाह कान अलैकुम् रकीबन्। कुर्आन शरीफ, चौथा पारः, पृष्ठ, 142

36 तस्मान्नजातः सुतः श्रेष्ठः श्वेतनामेति विश्रुतः।
द्वादशोत्तरवर्षं च तस्यायुः परिकीर्तितम्।।वही , 3.4.35

37 धनुहस्तस्य तनयः शतहीनं कृतं पदम्।
कीनाशस्तस्य तनतः पितामहासमं पदम्।। वही, 3.4.36

38 हनूकस्तस्य तनयो विष्णु भक्तिपरायणः।
फलानां हवनं कुर्वंस्तस्व ह्यासि जयन्सदा।। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3. 4.39

39 सीम शामश्च भावश्च त्रयः पुत्रा बभूविरे।
न्यूहः स्मृतो विष्णुभक्तस्योऽहं ध्यानपरायणः।। वही, 3.4.46

40 वत्स न्यूह शृणुष्वेदं प्रलयः सप्तमेऽहनि।
भविता त्वं जनैस्सार्ध नवमारुह्य सत्वरम्।। वही, 3.4.48

41 तथेति मत्वा स मुनिर्नावं कृत्वा सुपुष्टिताम्।।
हस्तत्रिशतलम्बां पञ्चाशद्धस्तविस्तृताम्।
त्रिशद्धस्तोच्छितां रम्यां सर्वजीवसमन्विताम्।। वही, 3.4.49–50

42 वत्लु अलैहिम् नबअ नूहिन् म. अिज् काल लिकौमिह या कौमि अिन् कान कबुर अलैकुम मकामी व तज्कीरी बिआयातिल्लाहि फअलल्लाहि तवक्कल्तु फअज्मिअू।अमरकुम् व शुरकाअ कुम् सुम्म ला युकुन् अम्रकुम् अलैकुम

भविष्य पुराण में वर्णित प्रलय को कुर्आन शरीफ में अल्लाह का अज़ाब (कहर) कहा गया।

न्यूह के पुत्रों के नाम से देशों के नाम भी रखे गये था।[43] सिम के कार्यकाल में उसने पाँच सौ वर्ष पर्यन्त शासन किया था। सिम के दो पुत्र सिंहल तथा अर्कसन्द थे जिन्होंने चार सौ साठ वर्ष पर्यन्त शासन किया था।[44] इन्हीं के वंश में आगे चलकर नूहर नाम का राजा हुआ जिसने अपने बहुत से शत्रुओं का विनाश कर शासन चलाया था। इसका पुत्र ताहर हुआ जो उसी के समान शासन करने वाला हुआ।[45]

उपसंहार – भविष्य पुराण में इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद का वर्णन आया है जिन्हें इस पुराण में महामद कहकर पुकारा गया है। यह वर्णन मुस्लिम धर्म की ओर संकेत करता है। वेदों में भी मुसल शब्द का प्रयोग प्राप्त हुआ है किन्तु वेदों में ये व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर अन्य अर्थ में प्रयुक्त है। भविष्य पुराण में आल्हा–उदल की कथा भी वर्णित है जिसमें भगवान् शिव के शाप से भीम कलियुग में म्लेच्छ पैदा होता है क्योंकि उसने भगवान् शिव के प्रति अपशब्दों वाली भाषा का प्रयोग किया था। इसी पुराण में भोजराज और महामद के संवाद का भी वर्णन किया गया है। मक्का महामद की जन्मभूमि थी तथा मदीना में वे जलकर भस्म हुये थे उनके शिष्यों ने उनके भस्म होने पर वहाँ की भूमि को मद से हीन पुकारा अतः मदहीना का विकृत रूप ही मदीना है। महामद से हीन भूमि–मदीना। भविष्य पुराण की कथायें तथा कुर्आन में वर्णित कथाओं में काफी समानता है। आदम और हव्यवती की कथा का तो तीनों में वर्णन मिलता है। ईसाई धर्म में एडम और ईव, इस्लाम में आदम और हौवा तथा भविष्य पुराण में आदम और हत्यवती कहा गया है। भविष्य पुराण के न्यूह को इस्लाम के पवित्र ग्रन्थ कुर्आन में नूह कहा गया है। म्लेच्छ, मुस्लिम राजाओं का कश्मीर पर आक्रमण भी वर्णित है तथा ईशामसीह का भी कश्मीर में निवास करने का वर्णन आया है। इनका प्रभाव कश्मीर के लोगों पर देखा जा सकता है क्योंकि वहाँ के लोग आज भी मुसलमान को मोसलमान कहते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अथर्ववेद, भाष्यकार : पद्मभूषण डॉ0 श्री पाद दामोदर सातवलेकर, प्रकाशक : वसन्त श्रीपाद सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी जिला बलसाड, संस्करण, 1985
2. कल्कि पुराण, प्रकाशक : महर्षि वेदव्यास, काशी धर्म्मामृत प्रेस में मुद्रित, संवत्, 1963
3. कुर्आन शरीफ, प्रकाशक : भुवन वाणी, 109 रानीकटरा, लखनऊ–3
4. पौराणिक कोश, लेखक : राणाप्रसाद शर्मा, प्रकाशक : ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी –1, प्रथम संस्करण
5. प्राचीन चरित्रकोश, लेखक : सिद्धेश्वर शास्त्री चित्राव, प्रकाशक : भारतीय चरित्रकोश मण्डल, पूना – 4, संस्करण, 1964
6. प्राचीन भारतीय संस्कृति कोश, लेखक : हरदेव बाहरी, प्रकाशक : विद्या प्रकाशन मन्दिर नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1988
7. पुराण विमर्श, लेखक : बलदेव उपाध्याय, प्रकाशक : चौखम्भा विद्याभवन वारणसी, प्रथम संस्करण, 1965
8. भविष्य पुराण – एक अनुशीलन, लेखक : राम जी तिवारी, व्याख्याकार : सत्यप्रकाश सिंह, प्रकाशक : वैशाली प्रकाशन, बक्शीपुर गोरखपुर
9. भविष्य पुराण (दो खण्ड), सम्पादक : श्री राम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान ख्वाजा कुतुब (वेदनगर), बरेली उत्तर प्रदेश, 1971
10. महाभारत (अट्ठारह पर्व) प्रणेता : वेदव्यास, अनुवादक : पण्डित रामनारायण दत्त शास्त्री पाण्डेय, प्रकाशक : गीता प्रेस गोरखपुर, सं0 2067
11. मानक हिन्दी कोश (चौथा खण्ड), लेखक : रामचन्द्र वर्मा, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रथम संस्करण, 1965
12. वायु पुराण, सम्पादक : श्री राम शर्मा आचार्य, प्रकाशक : संस्कृति संस्थान ख्वाजा कुतुब (वेदनगर) बरेली, उत्तर प्रदेश, 1974
13. वैदिक इन्डैक्स, लेखक : आर्थर एन्टोनी मैक्डॉनल एवं अर्थर बैरीडियल कीथ, व्याख्याकार : राम कुमार राय, प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1967
14. शतपथ ब्राह्मण, सम्पादक एवं व्याख्याकार : प0 गंगा प्रसाद एवं डा0 सत्यप्रकाश, प्रकाशक : प्राचीन वैज्ञानिक अध्ययन अनुसन्धान, बेस्ट पटेल नगर, दिल्ली, 1997
15. संस्कृत–हिन्दी कोश, लेखक : वामन शिवराम आप्टे, प्रकाशक : श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोती लाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–7, द्वितीय संस्करण, 1969

गुम्मतन् सुम्मकजू अिलैय व ला तुनजिरुनि। फकज्जबूहु फनज्जैनाहु व मम्मअह फिल्फुल्कि व जअल्नाहुम् खलाअिफ व अग्रक्नल्लजीन कज्जबू बिआयातिना ज् फन्जुर् कैफ कान आकिबतुलमुन्जरीन्। कुर्आन शरीफ, ग्यारहवाँ पारः, पृष्ठ, 365–366

43 च स्मृता देशा येनद्या ये सुताः स्मृताः।। भविष्य पुराण, प्रथम खण्ड, 3.5. 13–14

44 सिमवशं प्रवक्ष्यामि सिमो ज्येष्ठः स भूपतिः।
राज्यं पञ्चशतं वर्षं तेन म्लेच्छेन सत्कृतम्।। वही, 3.5.5

45 अर्कसन्दस्तस्य सुतश्चतुस्त्रिशच्च राज्यकम्।
चतुश्शत पुनज्ञेयं सिंहलस्तत्तनयोऽभवत्।
राज्यं तस्य स्मृतं तत्र षष्टयुत्तरचतुः शतम्।। वही, 3.5.14–15